पाठ - डायरी का एक पन्ना

पाठ्य पुस्तक प्रश्न

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्त्वपूर्ण था?

उत्तर: कलकत्ता के लोगों के लिए 26 जनवरी, 1931 इसलिए महत्त्वपूर्ण था क्योंकि लोगों ने इसी दिन स्वतंत्रता दिवस मनाने की पुनर्वृत्ति करते हुए बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसके लिए उन्होंने पुलिस की लाठियों की भी परवाह नहीं की।

प्रश्न 2.सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

उत्तर: जब नेताजी सुभाषचंद्र और स्वयं लेखक सहित कलकत्ता के लोगों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस खूब जोश के साथ मनाया, तब सुभाष बाबू ने जुलूस निकाला। उस समय पुरुषोत्तम राय भी इनके साथ थे, पर सुभाष बाबू के जुलूस का पूरा प्रबंध पूर्णोदास ने किया था।

प्रश्न 3. विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर: विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा अन्य लोगों को मारपीट कर भगा दिया।

प्रश्न 4. लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उत्तर: लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर इस बात का संकेत देना चाहते थे कि वे सभी स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में किसी से भी पीछे नहीं हैं। उन्हें भी स्वतंत्रता दिवस हेतु खुशियाँ मनानी आती हैं। वे पिछले वर्ष के आयोजन में कम भागीदारी की कमी को पूरा करना चाहते थे। वे अंग्रेज़ों को बताना चाहते थे कि अब वे उनका अपने देश में शासन सहन नहीं कर सकते तथा अब वे उनका जबरदस्त विरोध करते रहेंगे।

प्रश्न 5. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

उत्तर: पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों और मैदानों को इसलिए घेर लिया था ताकि लोग न तो स्वतंत्रता दिवस मनाने की पुनरावृत्ति कर सके और न राष्ट्रीय ध्वज फहराकर स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ सके।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

उत्तर: 26 जनवरी 1931 का दिन अमर बनाने के लिए कोलकाता के लोगों ने अपने-अपने मकानों और सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रखा था तथा हर रास्ते पर झंडे फहरा दिए थे। वे जुलूस के रूप में मोनुमेंट की ओर पहुँच रहे थे।

प्रश्न 2. आज जो बात थी वह निराली थी-किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'आज जो बात थी वह निराली थी' –यह इन बातों से स्पष्ट हो रहा था कि स्त्री समाज जगह-जगह से जुलूस निकालने की तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश और तैयारी में लगा हुआ था। मोनुमेंट के पास जैसा प्रबंध भोर में था, वैसी करीब एक बजे नहीं रहा। इससे तीन बजे से ही हजारों लोगों की टोलियाँ मैदान में घूमने लगीं।

प्रश्न 3. पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?
उत्तर: पुलिस कमिश्नर की नोटिस के अनुसार 26 जनवरी, 1931 को सभा को गैर कानूनी बताते हुए सभा न करने की लोगों को चेतावनी दी गई थी जबकि कौंसिल की नोटिस में लोगों से आह्वान किया गया था कि वे राष्ट्रीय ध्वज फहराने और प्रतिज्ञा पढ़ने के लिए अधिकाधिक संख्या में उपस्थित रहें।

प्रश्न 4. धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?
उत्तर: धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस इसलिए टूट गया, क्योंकि जुलूस में भाग लेने वालों पर पुलिस ने लाठियाँ बरसाईं। सुभाष बाबू को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस के डंडे बरसाने से काफी लोग घायल हो गए, जिससे धर्मतल्ले पर जुलूस टूट गया।

प्रश्न 5. डॉ० दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर ही रहे थे, उनके फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: डॉ० दासगुप्ता द्वारा घायलों की फोटो उतारने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं

- कोलकाता वासियों द्वारा स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु किए जा रहे प्रयास को दर्शाना।
- अंग्रेज़ी शासन के अत्याचारपूर्ण कार्यवाही को दिखाना।
- अन्य लोगों को प्रेरित करते हुए।
- प्रामाणिक साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-
प्रश्न 1. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?
उत्तर: सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्रियों की भूमिका पुरुषों के समान ही उल्लेखनीय एवं अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी। स्त्रियाँ जुलूस के रूप में मोनुमेंट की ओर जा रही थी। यह जुलूस जगह-जगह से आ रहा था। पुलिस बल इन्हें रोकने का प्रयास कर रहा था फिर भी स्त्रियों का दल आगे बढ़ रहा था। पुलिस जब सुभाष बाबू तथा अन्य पुरुषों से उलझी थी उसी बीच स्त्रियों ने मोनुमेंट पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर प्रतिज्ञा पढ़ी। इसके अलावा 105 स्त्रियों ने अपनी गिरफ्तारी देकर इस उत्सव को सफल बनाया।

प्रश्न 2. जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?
उत्तर: जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों में काफी जोश भर चुका था। कई स्त्रियों को गिरफ्तार कर लिया गया। वृजलाल गोयनका को एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी मारी, फिर पकड़ कर दूर तक ले गया और छोड़ दिया। वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया। वहाँ से वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लाल बाज़ार गया। वहाँ उसे गिरफ्तार कर लिया गया और मदालसा को भी पकड़ लिया गया। कुल मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गईं। इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ्तार नहीं किया था। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। इसके अतिरिक्त काफ़ी लोग। घायल हुए थे।

प्रश्न 3. जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है, तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभी तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन-से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।
उत्तर: यहाँ कानून भंग के माध्यम से उस कानून को भंग करने की बात कही गई है, जिसे अंग्रेजों ने अनैतिक और अनुचित रूप से भारतीयों पर थोप रखा था। ये कानून भारतीयों की स्वतंत्रता का कदम-कदम पर हनन करती थी और भारतीयों की प्रगति के मार्ग में बाधक थी। इन कानूनों को अंग्रेजों ने लागू किया था। ऐसे कानूनों को भंग करना पूर्णतया उचित था। भारतीयों की भलाई के लिए कानून भंग करना सराहनीय कदम था।

प्रश्न 4. बहुत-से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं; फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: हमारे विचार में 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता में आज़ादी के लिए व्यापक विरोध तथा संघर्ष हुआ था और यह अपूर्व इसलिए है, क्योंकि पहले कभी अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जुलूस नहीं निकाला गया, न ही इससे पहले कभी इतने बड़े स्तर पर सरकार को खुली चुनौती दी गई थी। प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया तथा बहुत-से लोग घायल हुए, पर फिर भी भारी संख्या में स्त्रियों ने जुलूस निकाला और गिरफ्तार हुईं। इससे पहले ऐसा नहीं हुआ था। इसलिए इसको अपूर्व कहा गया है।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1. आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है, वह आज बहुत अंश में धुल गया।

उत्तर: देश के विभिन्न भागों में स्वाधीनता संघर्ष हो रहे थे। लोग आंदोलन करते हुए गिरफ्तारियाँ दे रहे थे परंतु कलकत्ता या बंगाल से ऐसी कोई खबर नहीं आ रही थी। 26 दिसंबर 1931 के घटनाक्रम जिसमें 200 से ज्यादा लोग घायल हुए तथा 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया, ने इस कलकत्ता पर लगे उस कलंक को धो दिया। यहाँ भी आजादी का आंदोलन जोर पकड़ चुका था।

प्रश्न 2. खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

उत्तर: इसका आशय है कि इस बार पुलिस कमिश्नर के धमकी भरे नोटिस की परवाह न करते हुए सीधे-सीधे ब्रिटिश शासन को खुला चैलेंज दिया गया था अर्थात् उन्हें ब्रिटिश सत्ता का कोई भय नहीं है, इसलिए 26 जनवरी, 1931 को उनकी चुनौती सीधी टक्कर लेने में बदल गई और विरोध शुरू हो गया। ऐसा पहली बार हुआ था कि सरकार सभा न होने देने पर तुली थी, पर कौंसिल ने खुला चैलेंज देकर सभा आयोजित कर दिखाई थी। यह एक चुनौती भरा कदम था।

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए-

उत्तर:

(क) दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार जाकर गिरफ्तार हो गया।

(ख) हज़ारों आदमियों की भीड़ से लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे।

(ग) सुभाष बाबू को गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया।

II. 'बड़े भाई साहब' पाठ में से भी दो-दो सरल, संयुक्त, और मिश्र वाक्य छाँटकर लिखिए।

उत्तर:

सरल वाक्य –

1. मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता।
2. वे स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे।

संयुक्त वाक्य –

1. मैं पास हुआ और दरजे में प्रथम आया।
2. उनकी नज़र मेरी ओर उठी और प्राण निकल गए।

मिश्र वाक्य –

1. उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरू किया।
2. सहसा भाई साहब से मेरी मुझभेड़ हो गई, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं को ध्यान से पढ़िए और समझिए कि जाना, रहना और चुकना क्रियाओं का प्रयोग किस प्रकार गया है।

(क)

1. कई मकान **सजाए गए थे**।
2. कलकत्ते के प्रत्येक भाग में **झंडे लगाए गए थे**।

(ख)

1. बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा **फहरा रहा था**।
2. कितनी ही लारियाँ शहर में **घुमाई जा रही थीं**।
3. पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर **प्रदर्शन कर रही थी**।

(ग)

1. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था, वह **प्रबंध कर चुका था**।
2. पुलिस कमिश्नर का **नोटिस निकल चुका था**।

उत्तर:

छात्र केवल पढ़कर समझें।

प्रश्न 3. नीचे दिए गए शब्दों की संधि कीजिए-

उत्तर:

1. श्रद्धा + आनंद = **श्रद्धानंद**
2. प्रति + एक = **प्रत्येक**
3. पुरुष + उत्तम = **पुरुषोत्तम**
4. झंडा + उत्सव = **झंडोत्सव**
5. पुनः + आवृत्ति = **पुनरावृत्ति**
6. ज्योतिः + मय = **ज्योतिर्मय**

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. भौतिक रूप से दबे हुए होने पर भी अंग्रेज़ों के समय में ही हमारा मन आज़ाद हो चुका था। अतः दिसंबर सन् 1929 में लाहौर में कांग्रेस को एक बड़ा अधिवेशन हुआ, इसके सभापति जवाहरलाल नेहरू जी थे। इस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास किया गया कि अब हम 'पूर्ण स्वराज्य से कुछ भी कम स्वीकार नहीं करेंगे। 26 जनवरी 1930 को देशवासियों ने पूर्ण स्वतंत्रता के लिए हर प्रकार के बलिदान की प्रतिज्ञा की। उसके बाद आज़ादी प्राप्त होने तक प्रतिवर्ष 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। आजादी मिलने के बाद 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

उत्तर:

छात्र केवल जानकारी के लिए पढ़ें।

प्रश्न 2. डायरी-यह गद्य की एक विधा है। इसमें दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं, अनुभवों को वर्णित किया जाता है।
आप भी अपनी दैनिक जीवन से संबंधित घटनाओं को डायरी में लिखने का अभ्यास करें।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

egyanarchive

दिनांक: 11 जून 2025, बुधवार

एक सीख भरा दिन

आज का दिन मेरे लिए बहुत विशेष रहा। सुबह स्कूल गया तो वहाँ "पढ़ाई और खेल साथ-साथ" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता थी। मैंने पक्ष में भाषण दिया और सभी ने मेरे तर्कों की सराहना की। यह मेरे लिए आत्मविश्वास बढ़ाने वाला अनुभव था।

दोपहर को जब मैं घर लौटा तो दादी माँ के साथ बैठा। उन्होंने अपने जीवन के कुछ अनुभव साझा किए — कैसे उन्होंने सीमित पढ़ाई के बावजूद समझदारी से परिवार को सँभाला। मैंने महसूस किया कि *किताबी ज्ञान से कहीं ज्यादा जीवन का अनुभव सिखाता है।*

शाम को मैं कुछ समय खेलने भी गया। दोस्तों के साथ बैडमिंटन खेला, खूब हँसी-मज़ाक हुआ।

आज मुझे यह भी समझ आया कि *समय का सही उपयोग ही जीवन की कुंजी है।*

अब रात हो गई है और मैं थककर डायरी लिख रहा हूँ। यह दिन मुझे हमेशा याद रहेगा — *सीख, सादगी और संतुलन से भरा हुआ दिन।*

प्रश्न 3. जमना लाल बजाज महात्मा गांधी के पाचवाँ पुत्र के रूप में जाने जाते हैं, क्यों? अध्यापक से जानकारी प्राप्त करें।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

जमना लाल बजाज को **महात्मा गांधी के "पाँचवें पुत्र"** के रूप में इसलिए जाना जाता है क्योंकि:

1. गांधीजी से अत्यधिक आत्मीय संबंध:

जमना लाल बजाज, स्वतंत्रता संग्राम के समर्पित कार्यकर्ता और उद्योगपति थे। वे गांधीजी के इतने निकट थे कि महात्मा गांधी ने स्वयं उन्हें *"मेरा पाँचवाँ पुत्र"* कहा था। उन्होंने गांधीजी के विचारों को केवल समझा नहीं, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारा।

2. स्वदेशी और खादी का समर्थन:

उन्होंने अपने विदेशी वस्त्रों को त्यागकर खादी को अपनाया और अपने औद्योगिक जीवन में *स्वदेशी आंदोलन* का गहरा समर्थन किया।

3. गांधीजी के आंदोलन में सक्रिय भागीदारी:

जमना लाल बजाज ने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों में हिस्सा लिया। उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने *गांधी आश्रम* को आर्थिक सहायता दी और *वर्धा* (सेवाग्राम) में गांधीजी के कार्यों को गति दी।

4. समाज सुधार में रुचि:

वे *छुआछूत उन्मूलन, हरिजन सेवा, नारी शिक्षा* जैसे कार्यों में गांधीजी के विचारों पर चलते हुए आगे रहे।

प्रश्न 4. ढाई लाख का जानकी देवी पुरस्कार जमना लाल बजाज फाउंडेशन द्वारा पूरे भारत में सराहनीय कार्य करने वाली महिलाओं को दिया जाता है। यहाँ ऐसी कुछ महिलाओं के नाम दिए जा रहे हैं। श्रीमती अनुताई लिमये 1993 महाराष्ट्र; सरस्वती गोरा 1996 आंध्र प्रदेश; मीना अग्रवाल 1998 असम; सिस्टर मैथिली 1999 केरल; कुंतला कुमारी आचार्य 2001 उड़ीसा। इनमें से किसी एक के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

श्रीमती सरस्वती गोरा: एक साहसी समाज-सुधारक

जन्म: 1908, गोदावरी ज़िला, आंध्र प्रदेश

निधन: 2006

परिचय:

सरस्वती गोरा एक महान समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और *नास्तिक आंदोलन* की अग्रणी नेता थीं। उन्होंने पति गोरा (Goparaju Ramachandra Rao) के साथ मिलकर भारत में *सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई* चलाई।

मुख्य कार्य और योगदान:

1. छुआछूत और जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष:

उन्होंने अस्पृश्यता के खिलाफ ज़बरदस्त अभियान चलाया। दलितों के साथ घुलने-मिलने, उन्हें मंदिरों और सार्वजनिक स्थलों में प्रवेश दिलवाने जैसे कदम उन्होंने उठाए।

2. नास्तिक आंदोलन और विचार स्वातंत्र्य:

सरस्वती गोरा ने *Atheist Centre* (स्थापित: 1940) के माध्यम से तर्क, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवतावादी मूल्यों को बढ़ावा दिया।

3. बाल विवाह और अंधविश्वास के विरुद्ध जागरूकता:

उन्होंने महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों के लिए काम किया, खासकर ग्रामीण भारत में।

4. गांधीवादी सिद्धांतों की अनुयायी:

हालाँकि वे नास्तिक थीं, लेकिन उन्होंने *गांधीजी के सत्य और अहिंसा* के मार्ग पर चलते हुए सामाजिक सेवा की।

सम्मान:

- **जमना लाल बजाज पुरस्कार (1996):** महिला सशक्तिकरण, छुआछूत विरोध और तर्कवादी विचारों के प्रचार के लिए
- अन्य कई समाजसेवी संस्थानों द्वारा भी सम्मानित

उनकी विरासत:

आज भी आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा स्थित *Atheist Centre* उनके द्वारा किए गए कार्यों को आगे बढ़ा रहा है।
उनका जीवन दर्शाता है कि *साहस, मानवता और विचारशीलता से समाज बदला जा सकता है।*

परियोजना कार्य

प्रश्न 1.

स्वतंत्रता आंदोलन में निम्नलिखित महिलाओं ने जो योगदान दिया, उसके बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करके लिखिए-

(क) सरोजिनी नायडू

(ख) अरुणा आसफ़ अली

(ग) कस्तूरबा गांधी ।

उत्तर:

स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान –

(क) सरोजिनी नायडू – सरोजिनी नायडू ने महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर देश के लिए समर्पित हो गईं। नायडू ने अनेक राष्ट्रीय आंदोलनों का सक्रिय रूप से नेतृत्व किया। गाँव-गाँव घूमकर देश-प्रेम का अलख जगाया। सरोजिनी के वक्तव्य जनता के हृदय को झकझोर देते थे। उनके भाषण जनता को अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित कर देते थे। 1925 में ये कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षा बनी। स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश की राज्यपाल बनी। आपका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था।

(ख) अरुणा आसफ अली – अरुणा आसफ़ अली को भारत के स्वतंत्रता संग्राम की 'ग्रांड ओल्ड लेडी' और 'भारत छोड़ो आंदोलन के समय मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का झंडा फहराने के लिए याद किया जाता है। इनकी शिक्षा लाहौर और नैनीताल में हुई। इन्होंने स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की। नमक सत्याग्रह के दौरान होने वाली सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने के कारण उन्हें गिरफ्तार किया गया। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी अहम् भूमिका रही।

(ग) कस्तूरबा गांधी – कस्तूरबा गांधी महात्मा गांधी की पत्नी थीं, वे 'बा' के नाम से विख्यात हैं। इनका जन्म 11 अप्रैल 1869 को हुआ। कस्तूरबा ने स्वेच्छा से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। तीन महिलाओं के साथ ये जेल गईं। जेल में इन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिला। इसका परिणाम यह हुआ कि इनका शरीर ठठरी मात्र रह गया। चंपारन के सत्याग्रह में ही उन्होंने हिस्सा लिया। बापू की गिरफ्तारी पर उन्होंने जो भाषण दिया वह उनको वीरांगना के रूप में प्रतिष्ठित करता है। इनके योगदान के लिए एक करोड़ रुपया एकत्र कर इंदौर में कस्तूरबा गांधी स्मारक की स्थापना की। भारत के स्वतंत्रता
आंदोलन में इनकी जो भूमिका रही, उसे भारत हमेशा याद रखेगा।

प्रश्न 2. इस पाठ के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में कलकत्ता (कोलकाता) के योगदान का चित्र स्पष्ट होता है। आज़ादी के आंदोलन में आपके क्षेत्र का भी किसी न किसी प्रकार का योगदान रहा होगा। पुस्तकालय, अपने परिचितों या फिर किसी दूसरे स्रोत से इस संबंध में जानकारी हासिल कर लिखिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

मेरे शहर का वीर अतीत

आज स्कूल में "स्वतंत्रता संग्राम में अपने क्षेत्र का योगदान" विषय पर चर्चा हुई। मैं सोचने लगा कि क्या सच में मेरे शहर **कानपुर** ने भी आज़ादी की लड़ाई में कोई योगदान दिया था? जवाब तलाशने निकला तो कई प्रेरणादायक बातें सामने आईं।

मुझे पता चला कि हमारे शहर के महान सेनानी **नाना साहब पेशवा** ने 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था। उनके साथ **तात्या टोपे** और **रानी लक्ष्मीबाई** ने भी मिलकर कानपुर को विद्रोह का मुख्य केंद्र बनाया था। बिठूर से शुरू हुआ यह विद्रोह जल्द ही पूरे उत्तर भारत में फैल गया।

इसके अलावा **गणेश शंकर विद्यार्थी**, एक और क्रांतिकारी पत्रकार, कानपुर से ही थे। उन्होंने 'प्रताप' पत्रिका के माध्यम से अंग्रेजों के खिलाफ कलम चलाई और आखिरकार communal riots रोकने के प्रयास में शहीद हो गए।

जब मैंने यह सब पढ़ा तो मन गर्व से भर गया। मेरा शहर सिर्फ उद्योगों के लिए ही नहीं, *स्वतंत्रता की ज्वाला* के लिए भी जाना जाता है।

आज महसूस किया कि आज़ादी हमें यूँ ही नहीं मिली थी। मेरे शहर के नायकों की कुर्बानियों ने इस धरती को पावन बना दिया।

स्वतंत्रता संग्राम में क्षेत्रीय योगदान – प्रमुख सेनानी सूची

उत्तर प्रदेश

- **रामप्रसाद बिस्मिल** – काकोरी कांड के नायक
- **चंद्रशेखर आज़ाद** – क्रांतिकारी संगठन हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के नेता
- **रानी लक्ष्मीबाई (झाँसी)** – 1857 की क्रांति की वीरांगना
- **गणेश शंकर विद्यार्थी** – क्रांतिकारी पत्रकार और समाज सुधारक

पश्चिम बंगाल (तत्कालीन कलकत्ता)

- **सुभाष चंद्र बोस** – आज़ाद हिंद फौज के संस्थापक
- **अरविंद घोष** – क्रांतिकारी नेता और आध्यात्मिक चिंतक
- **बिनोदीनी दासी**, **मतंगिनी हाज़रा** – महिला स्वतंत्रता सेनानी
- **रासबिहारी बोस** – जापान में क्रांति की नींव

पंजाब

- **भगत सिंह** – HSRA के क्रांतिकारी, 'इंकलाब ज़िंदाबाद' का नारा

- **लाला लाजपत राय** – लाठीचार्ज में घायल होकर शहीद
- **उधम सिंह** – जलियाँवाला बाग के बदले में जनरल डायर की हत्या की

बिहार

- **डॉ. राजेंद्र प्रसाद** – स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति
- **जयप्रकाश नारायण** – समाजवादी नेता
- **कुंवर सिंह** – 1857 की क्रांति के बुजुर्ग सेनानी

महाराष्ट्र

- **बाल गंगाधर तिलक** – "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" का नारा
- **वीर सावरकर** – हिंदू महासभा और क्रांतिकारी विचार
- **दादाभाई नौरोजी** – कांग्रेस के वरिष्ठ नेता

गुजरात

- **महात्मा गांधी** – सत्याग्रह और अहिंसा के प्रणेता
- **सरदार वल्लभभाई पटेल** – भारत के लौह पुरुष
- **मोहनलाल पांड्या** – नमक सत्याग्रह में भागीदार

तमिलनाडु

- **वी. ओ. चिदंबरम पिल्लै** – स्वदेशी जल परिवहन के प्रवर्तक
- **सुब्रमण्य भारती** – क्रांतिकारी कवि
- **के. कामराज** – कांग्रेस नेता, शिक्षा सुधारक

आंध्र प्रदेश

- **अल्लूरी सीताराम राजू** – जनजातीय विद्रोह के नेता
- **सरोजिनी नायडू** – कवयित्री, स्वतंत्रता सेनानी, पहली महिला राज्यपाल

उड़ीसा (ओडिशा)

- **बक्शी जगबन्धु** – 1817 का 'पाइका विद्रोह'
- **गौरीशंकर राय**, **मालती देवी** – उड़ीसा के समाज सुधारक

प्रश्न 3. 'केवल प्रचार में दो हज़ार रुपया खर्च किया गया था। तत्कालीन समय को मद्देनजर रखते हुए अनुमान लगाइए कि प्रचार-प्रसार के लिए किन माध्यमों का उपयोग किया गया होगा?

उत्तर: आज़ादी से पूर्व प्रचार-प्रसार के माध्यम बहुत सीमित थे। उस समय के प्रचार-प्रसार माध्यमों में समाचार पत्र (अखबार) रेडियो, सभाएँ, गोष्ठियां, भाषण आदि प्रमुख थे। इन सभी प्रचार-प्रसार माध्यमों में समाचार पत्र की भूमिका सर्वाधिक थी अर्थात् यही प्रमुख साधन था।

प्रश्न 4. आपको अपने विद्यालय में लगने वाले पल्स पोलियो केंद्र की सूचना पूरे मोहल्ले को देनी है। आप इस बात का प्रचार बिना पैसे के कैसे कर पाएँगे? उदाहरण के साथ लिखिए।

उत्तर: नि:शुल्क प्रचार के तरीके:

1. माइक से घोषणाएँ (घरेलू स्पीकर से)

उदाहरण: "सभी माता-पिता से अनुरोध है कि वे अपने पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों को **सोमवार, सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक** विद्यालय में पल्स पोलियो दवा पिलवाने अवश्य लाएँ। यह दवा पूरी तरह मुफ्त है।"

2. घर-घर जाकर बताना (मोहल्ला प्रचार)

egyanarchive

छात्र समूह बनाकर गली-गली जाकर लोगों को politely बताएँ, जैसे –

“नमस्ते चाची! सोमवार को स्कूल में पोलियो ड्रॉप्स दी जा रही हैं, आप बिट्टू को ज़रूर लेकर आइएगा।”

3. हस्तलिखित पोस्टर और चार्ट बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाना

पोस्टर पर आकर्षक रंगों और चित्रों के साथ लिखें:

“दो बूंद ज़िंदगी की” – पल्स पोलियो अभियान

स्थान: राजकीय विद्यालय, समय: सुबह 9 से दोपहर 2 बजे

आइए, अपने बच्चे को पोलियो से बचाएँ!”

4. विद्यालय की प्रार्थना सभा में घोषणा करना

ताकि छात्र अपने घर जाकर माता-पिता को याद दिला सकें।

5. व्हाट्सएप ग्रुप या मोबाइल कॉल से जानकारी साझा करना

मोहल्ले के व्हाट्सएप ग्रुप में एक छोटा संदेश और पोस्टर साझा करें।

egyanarchive